आँधी को शान्त करना (लूका : ८)

००२

"यीशु प्रभु हैं"

अकस्मात शक्तिशाली आँधी आई (कोलाहल, आँधी, गरजना, वर्षा) |
लहरें नौका से टकराने लगीं और उसे इधर उधर उछालने लगीं |
आँधी आक्रामक थी | मल्लाहों ने कस कर चप्पू पकड़ लिये | लोग डर गये थे क्योंकि वे जानते थे कि गलील के समुद्र में इस प्रकार की आँधी कितनी घातक हो सकती थी |
फिर एक और लहर नौका से टकराई | आँधी ने कोलाहल मचाया और समुद्र गरज रहा था |
क्या उन की रक्षा की जा सकती थी ?

नौका में सवार लोगों में कुछ मछुआरे थे | उन्हें ऐसी ऋतु का पहले से अनुभव था, परन्तु यह तूफान उन तूफानों से अधिक भयानक था जिन का उन को पहले से अनुभव था |
चेले : "सहायता कीजिये ! हम डूब रहे हैं!"
जब वे अपने जीवन के लिये लड़ रहे थे, तब यीशु नौका के पिछले भाग में लेटे थे – और आप सो रहे थे !
आँधी की अत्यंत खतरनाक घड़ी में वे यीशु की ओर दौड़ पड़े और चिल्लाये :
चेले : "यीशु! हम डूब रहे हैं और आप को कोई चिन्ता नहीं है ? आप को हमारी सहायता करनी चाहिये! हम डूब रहे हैं !"

जब तुम्हारे जीवन की नौका से भय और चिन्ता की लहरें टकरा रही हों तब तुम किसे पुकारते हो ? यीशु हर वस्तु पर विजय पा लेते हैं | आप खड़े हो गये और आँधी को ड़ाँटा |
यीशु : "शान्त हो जा! थम जा !"

तुरन्त आँधी थम गई और चैन हो गया | मानो आँधी आई ही न थी |
चेले इस आश्चर्यकर्म से अचंभित हो गये |
चेले : "यह यीशु कौन हैं ? आँधी और लहरें भी आप की आज्ञा का पालन करती हैं !"

यीशु प्रभु हैं : आप प्रकृति और रोग और दुष्ट आत्माओं पर भी विजय पाते हैं | और यीशु मृत्यु पर भी विजय पा चुके हैं | आप के समान और कोई नहीं है, और कोई व्यक्ति वह काम नहीं कर सकता जो आप करते हैं |
और चेलों ने सोचा था कि वे, नौका और यीशु, सब के सब डूब जायेंगे |
यीशु : "तुम्हारा विश्वास कहाँ है ? तुम डर क्यों गये ?"
उन्हें स्वय : अपने आप से वही प्रश्न पूछना पड़ा जिसे यीशु ने उन से पूछा था |

यीशु तुम्हारे जीवन में उभर आने वाली लहरों पर विजय पाते हैं |
आप से आव्यश्कता, चिन्ता, विद्यालय की समस्याओं, और रोग के विषय में बातचीत कीजिये |
यीशु प्रभु हैं, इस लिये डरो नहीं, बल्कि आप पर विश्वास कीजिये |

लोग : वर्णन कर्ता, चेले, यीशु

© Copyright : CEF Germany © कॉपीराइट सी इ एफ जरमनी